E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 7 | July 2025

महादेवी वर्मा की दृष्टि में भारतीय स्त्री की सामाजिक एवं आर्थिक स्वतत्रंता का मूल्यांकन

डॉ० प्रमोद कुमार सहनी

सार

महादेवी वर्मा छायावाद की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भों 'जयशंकर प्रसाद', सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" और 'सुमित्रानंदन पंत' के साथ महत्वपूर्ण हस्ताक्षर मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक 'मीराबाई' भी कहा जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। महादेवी जी अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य बनी रहीं। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा जी साहित्य और संगीत के जानकार होने के साथ–साथ कुशल चित्रकार और अनुवादक भी थीं। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्याकार के रूप में जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। भारत की 50वीं सबसे यशस्वी महिलाओं में इनका नाम बड़ा आदर से लिया जाता है।

महादेवी वर्मा का प्रारंभिक जीवन और परिवार

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च सन् 1907 को प्रातः 8 बजे फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश के एक संपन्न विद्वान परिवार में हुआ। इस परिवार में सात पीढ़ियो के बाद महादेवी जी के रूप में पुत्री का जन्म हुआ था। अतः इनके दादा बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी–महादेवी माना और उन्होने इनका नाम महादेवी रखा था। महादेवी जी के माता हेमरानी देवी और पिता जी गोविन्द प्रसाद वर्मा थे। महादेवी वर्मा की छोटी बहन और दो छोटे भाई थे। क्रमशः श्यामा देवी श्री जगमोहन वर्मा एवं श्री मनमोहन वर्मा।

महादेवी वर्मा के ह्रदय में बचपन से ही जीव मात्र के प्रति करूणा दया थी। जाड़े के दिन में कूँ कूँ करते हुए पिल्लो का भी ध्यान रहता था। महादेवी पशु–पक्षियों का लालन–पालन और उनके साथ खेलकूद में ही दिन बिताती थी। चित्रकारी करने का शौक भी उन्हें बचपन से ही था। इस शौक की पूर्ति वे मिट्टी पर कोयले आदि से चित्र उकेर कर करती थीं। उनके व्यक्तित्व में जो पीड़ा, करूणा और वेदना है, अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है।

महादेवी की प्रारम्भिक शिक्षा

महादेवी की शिक्षा 1912 में इंदौर के मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा उनके घर पर ही दी जाती रही। 1921 में महादेवी वर्मा ने वर्ग आठ में पूरे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया और कविता की शुरूआत भी इसी समय और यहीं से हुई। वे

सात वर्ष की आयु में ही कविता लिखने लगी थी और 1925 तक जब आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

महादेवी जी का वैवाहिक जीवन

नवाँ वर्ष पूरा होते ही सन् 1916 में उनके दादा जी श्री बाँके बिहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी डॉ. श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के छात्र थे। महादेवी वर्मा की शादी उस उम्र में हुई थी जिस समय वे शादी मतलब भी नहीं समझती थी। उन्हीं के अनुसार – "दादा ने पुण्य लाभ से विवाह रच दिया, पिताजी विरोध नही कर सके। बारात आयी तो बाहर भाग कर हम सबके बीच खड़े होकर बारात देखने लगे। व्रत रखने को कहा गया तो मिठाई वाले कमरे में बैठ कर खूब मिठाई खाई। रात को सोते समय नाई ने गोद में लेकर फेरे दिलवाये होंगें, हमें कुछ ध्यान नहीं है। प्रातः आँख खुली तो कपड़े में गाँठ लगी देखी तो उसे खोलकर भाग गए।

महादेवी वर्मा अपने जीवन में पति–पत्नी संबंध को स्वीकार न सकने का कारण आज भी रहस्य बना हुआ है। आलोचकों और विद्वानों ने अपने–अपने ढ़ँग से अनेक प्रकार की संभावान व्यक्त की है। गंगा प्रसाद पाण्डेय के अनुसार– "ससुराल पहुँच कर महादेवी जी ने जो उत्पात मचाया, उसे ससुराल वाले ही जाने है ... रोना, बस रोना। नई बालिका बहू के स्वागत समारोह का उत्सव फीका पड़ गया और घर में एक आंतक छा गया। फलतः ससुर महोदय दूसरे ही दिन उन्हें वपास लौटा गए।"

पिता की निधन के बाद डॉ० स्वरूप नारायण वर्मा कुछ समय तक अपने ससुर के पास ही रहे, पर पुत्री की मनोवृत्ति को देखकर महादेवी के बाबू जी ने श्री वर्मा को इण्टर उत्तीर्ण करवाकर लखनऊ मेडिकल कॉलेज में नामांकन करवा कर वही बोर्डिंग हाउस में रहने की व्यवस्था कर दी। जब महादेवी वर्मा इलाहाबाद मे ंपढ़ने लगी तो डॉ० स्वरूप नारायण वर्मा उनसे मिलने वहाँ भी आते थे। किन्तु महादेवी वर्मा उदासीन ही बनी रहीं। विवाहित जीवन के प्रति उनमें विरक्ति उत्पन्न हो गई थी। इस सबके बावजूद श्री वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री–पुरूष के रूप में उनके संबंध अच्छे ही रहे। दोनों में कभी–कभी पत्राचार भी होता था। यदा–कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में मिलने भी आते थे। एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि डॉ० वर्मा ने महादेवी वर्मा जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक सन्यासिनी का रहा। उन्होने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोया और शीशा नहीं देखा।

महादेवी वर्मा की दृष्टि में भारतीय नारी

छायावादी प्रकृति, तरल, सरल सौंदर्य पर प्रेम, विरह और वेदना का स्वर संधान कर, उस विरह वेदना को रहस्यमयी अध्यात्म चेतना की अंतरंग अनुभूतियों से सजा–संवार कर, अपने काव्यमय स्वरों में जिस साहित्यकार ने कहनीय, काम्य एवं ग्राह्य बना दिया, उस महान् विभूति का नाम है महादेवी वर्मा। महादेवी

वर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे काव्य, रेखाचित्र निबंध और आलोचना साहित्य से निर्मित हुआ है। वस्तुतः इनके द्वारा सृजित साहित्य की दो धुरियाँ है। एक धूरी उनका काव्य है, जिसमें करूणा और वेदना की अजस्त्र धारा बहती है। दूसरी धूरी गद्य साहित्य है, जिसमें उनकी सामाजिक यथार्थ दृष्टि एवं सामाजिक चिंतनधारा है। उनके सामाजिक चिंतन का उत्कर्ष 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (1942) निबंध संग्रह में संगृहीत निबंधो में देखा जा सकता है, जिसमें भारतीय स्त्री विषयक चिंतन व्यवस्थित है।

इन निबंधों में प्रमुख है – हमारी श्रृंखला की कड़ियाँ, युद्व और नारी, नारीत्व का अभिशाप, आधुनिक नारी, हिन्दू स्त्री का पत्नीत्व स्त्री के अर्थ स्वातंव्य का प्रश्न आदि। भारतीय नारी की परवशता का रेखांकन दिखाई देता है, किन्तु उन्होनें जिन सवालों को उठाया है, वहां आक्रोश नहीं है, वरन् एक प्रकार की शालीनता है। इसलिए कि वे सृजन पर विश्वास करती हैं और उनका ध्वंस के द्वारा पुनर्सृजन विश्वास नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि वे भारतीय समाज की विकृतियों को सृजन के द्वारा मिटाना चाहती है, जिनसे भारतीय स्त्री प्रारंभ से ही अनके कठिनाईयों का सामना कर रही है। महादेवी वर्मा का स्त्री चिंतन प्रारंभ से ही अनेक कठिनाईयों का सामना कर रही है।

महादेवी का स्त्री चिंतन समाज केन्द्रित है, फलतः स्त्री तटस्थ और निष्पक्ष है। वे स्त्री जीवन की विडम्बनाओं के लिए पुरूषों को ही दोषी नहीं ठहराती, बल्कि महिलाओं को भी समान रूप से उत्तरदायी ठहराती है। 'अपनी बात' में वह कहती है, "समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर करता है और यह ज्ञान ज्ञाता की अपेक्षा रखता है। अतः अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए। सामान्यतः भारतीय नारी में इसी विशेषता का अभाव मिलेगा।" भारतीय नारी की अदृष्ट विडम्बना को उजागर करते हुए उन्होनें यह लिखा कि एक ओर तो वह देवी के प्रतिष्ठापूर्ण पद पर शोभित है तो दूसरी ओर परवश भी। उनका कथन है, "वह पवित्र देव मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी भी बन चुकी है और अपने गृह के मलिन कोने की बन्दिनी भी।"

वर्मा ने समाज की पूर्णता हेतु पुरूष एवं स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व को आवश्यक माना। उनकी दृष्टि में स्त्री को पुरूष की छाया मात्र मानना स्त्री जाति के लिए अभिशाप है। प्राचीन भारती की महान विदुषी मैत्रेयी, सीता, यशोधरा आदि के साथ महाभारतकालीन स्त्रियों के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए लिखा, "महाभारत के समय की कितनी ही स्त्रियाँ अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा कर्तव्यबुद्वि के लिए स्मरणीय रहेंगी। उनमें से प्रत्येक संसार पथ में पुरूष की संगिनी है, छाया मात्र नहीं।" महादेवी ने स्त्रियों को पुरूषोचित्त अनुकरण वृत्ति को उचित ही माना, क्योकि इससे सामाजिक श्रृंखला शिथिल तथा व्यक्तिगत बंधन और संकुचित होते है। इसलिए वे भारतीय समाज में स्त्री की दयनीय दशा के लिए स्त्री के अर्थहीन अनुसरण और अनर्थमय अनुकरण को जिम्मेदार ठहराती है – "पुरूष के अन्धानुकरण ने स्त्री के व्यक्तित्व को अपना दर्पण बनाकर उसकी उपयोगिता को सीमित कर ही दी, साथ ही समाज को अपूर्ण बना दिया।" दोनो की तुलना करते हुए वह कहती है – "पुरूष समाज का न्याय है, स्त्री दया, पुरूष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री

क्षमा, पुरूष शुष्क कर्त्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरूष बल है, स्त्री ह्रदय की प्रेरणा।" इस उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरूष के प्राकृतिक मानसिक वैपरीत्य द्वारा ही समाज सामंजस्यपूर्ण व अखण्ड हो सकता है।

महादेवी वर्मा ने सामाजिक बंधनो को स्त्री वैयक्तिक विकास में बाधक माना। चुंकि उनको भी समाज में आधे हिस्सेदारी है, अतः उसकी उपेक्षा के प्रति सचेत करते हुए लिखा, "जो देश के भावी नागरिकों की विधाता है, उनकी प्रथम और परम गुरू है, जो जन्म भर आपको मिटाकर, दूसरो को बनाती रहती है, वे केवल तभी तक आदरहीन मातृत्व तथा अधिकार शून्य पत्नीत्व स्वीकार करती रह सकेंगी, जब तक उन्हें अपनी शक्तियों का एहसास नहीं होता। 'युद्व और नारी' विषयक लेख में उन्होनें स्त्री को अहिंसा प्रिय बताया तथा युद्व को स्त्री के विकास में बाधक बताया", स्त्री केवल शारीरिक और मानसिक दृष्टि से ही युद्व के अनुपयुक्त नही रही? वरन् युद्व उसके विकास में भी बाधक रहा है।

स्त्री के महान से महान त्याग को भी संसार ने उच्च दृष्टि से स्वीकार करने के बजाय उसकी कमजोरी समझा। 'नारीत्व के अभिशाप' विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, "क्या नारी के बड़े से बड़े त्याग को, आत्मनिवेदन हो, संसार ने अपना अधिकार नही, किंतु उसका अद्भुत दान समझकर नम्रता से स्वीकार किया है ? कम से कम इतिहास तो नहीं बताता कि उसके किसी बलिदान को पुरूष ने उसकी दुर्बलता के अतिरिक्त कुछ और समझने का प्रयत्न किया।" उन्हें इस बात से भी दिक्कत है कि स्त्री ने अपनी शक्ति को समझने की कभी कोशिश ही नहीं किया। वह स्वयं अपनी वेदना के कारणों को नहीं जानती और न अपने असह्य कष्ट के प्रतिकार की भावना से परिचित है। वे स्त्री की कोमलताजनित कमजोरी को भी अभिशाप मानती है, जिसके कारण वह उसे जीवन की स्वाभाविकता मान लेती है – "वह अपनी प्रकृति–जनित कोमलता को त्रुटि चाहे मानती हो, परंतु उसे स्वाभाविक अवश्य समझती है, अन्यथा उसके इतने प्रयास का कोई अर्थ न होता।"

आधुनिक स्त्रियों की स्वच्छन्द प्रवृत्ति व निरूउद्देश्य गंतव्य को अनुचित ठहराते हुए उन्होने प्राचीन स्त्रियों के योगदान को तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया। आधुनिक स्त्री और प्राचीन स्त्रीं के बारे में वे कहती हैं, "आज की सुन्दर नारी भी पुरूष के निकट और कोई महत्व नहीं रखती। उसे स्वयं भी इस कटु सत्य को बोध होता है, परंतु वह उसे परिस्थिति का दोषमात्र समझती है। .... पहले की नारी जाति केवल रूप और वय का पाथेय लेकर संसार यात्रा के लिए नहीं निकली थी। उसने संसार को वह दिया जो पुरूष नहीं दें सकता था, अतः उसे अक्षय वरदान का वह आज तक कृतज्ञ है।"

कवयित्री महादेवी वर्मा जी ने स्त्री के घर और बाहर के कर्त्तव्यों एवं अधिकारों की कठिनाईयों पर भी विचार किया है। उनका मानना है कि युगों से स्त्री का कार्यक्षेत्र घर तक सीमित रहा है, किंतु आधुनिक काल में उसके कर्त्तव्यों का विस्तार हुआ है। वे कहती है, "वास्तव में स्त्री भी आ केवल रमणी या भार्या ही रही, वरन् घर के बाहर भी समाज का एक विशेष अंग तथा महत्वपूर्ण नागरिक है, अतः उसका कर्त्तव्य

भी अनेकाकार हो गया है, जिसके पालन में कभी – कभी ऐसे संघर्ष के अवसर आ पड़ते है, जिसमें किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाना पड़ता है।

महादेवी वर्मा जी ने वार–वनिताओं की विडम्बनाओं पर भी विचार प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि गर्वित समाज, जिन्हें पतित स्त्री की संज्ञा देता है, वस्तुतः ऐसी स्त्रियों ने पुरूष वासना की वेदी पर घोरतम बलिदान किया है। महोदवी कहती है – "उनके नारीत्व को दूसरो के मनोरंजन मात्र का ध्येय मिला है तथा उनके जीवन का तितली जैसे कच्चे रंगो से श्रृंगार हुआ है, जिसमें मोहकता है, परंतु स्थायीत्व नहीं।" वहीं दूसरी ओर साधारणतः बहुत बड़ा दुराचारी पुरूष भी परम स्त्री के चरित्र का आलोचक ही नहीं, न्यायकर्त्ता भी बना रहता है। ऐसी स्थिति में पतित स्त्रियों के जीवन परिवर्तन लाने का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। महादेवी वर्मा ने प्राचीनकाल से लेकर सभ्यता के विकास तक भारतीय समाज में स्त्री की दयनीय दशा का वर्णन किया है। उनकी दृष्टि में इसका कारण स्त्री और पुरूष के अधिकारों की विषमता है। महादेवी कहती है, "पुरूष ने उसके अधिकार अपने सुख की तुला पर तौले, उसकी विशेषता पर नहीं, अतः समाज की सब व्यवस्थाओ में उसके और पुरूष के अधिकारों में एक विचित्र विषमता मिलती है। .... एक ओर सामाजिक व्यवस्थाओं ने स्त्री को अधिकार देने में पुरूष की सुविधा का विशेष ध्यान रखा है, दूसरी ओर उसकी आर्थिक स्थिति भी परावलम्बन से रहित नहीं रही। भारतीय स्त्री के संबंध में पुरूष का भर्ता नाम जितना यथार्थ है, उतना संभवतः और कोई नाम नही।" महादेवी अपनी बात स्पष्ट रूप से कहती है कि आर्थिक रूप से जो स्थिति स्त्री की प्राचीन समाज में थी, उसमें अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

वास्तव में स्त्री सिर्फ पत्नी के रूप में समाज का अंग नहीं है। महादेवी जी की दृष्टि में उसके भिन्न–भिन्न रूपों में व्यापक तथा सामान्य गुणों द्वारा ही समझना समाज के लिए आवश्यक है। महादेवी लिखती है, "आज की हमारी सामाजिक परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर प्राण–प्रतिष्ठा चाहती है।........ आज उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष को चुनौती देकर अपनी शक्ति की परीक्षा देने का प्रण किया है ओर उसी में उत्तीर्ण होने को जीवन चरम सफलता समझती है।" वर्तमान समय के समाज में नारी के साथ होने वाले व्यवहार पर उन्होने बेबाक टिप्पणी की है – "जैसे–जैसे हमारा समजा अपने आधे सदस्यों से अधिकारहीन बलिदान और आत्म–सर्मपण लेता आ रहा है, वैसे–वैसे वह भी अपने अधिकार खोता जा रहा है, यह समाज के असंतोषपूर्ण वातावरण से प्रकट है।"

वस्तुतः साठोत्तरी चिंतन में स्त्री चिंतन की दिशा और दशा बदल गई है। जहाँ भारतीय समाज की सीमाओं को लाँघते हुए एक आधुनिक एवं पुरूष से अलग तथा उसके समानांतर स्त्री की छवि गढ़ी जा रही है, इसके विपरित महादेवी वर्मा का लेखन भारतीय संस्कृति की परिधि में स्त्रियों की महत्ता की स्थापना है, साथ ही स्त्री की सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता पर चिंतन भी है।

महादेवी वर्मा ने 1935 ई० में 'चाँद' पत्रिका के विदुषी अंक का संपादन किया था। पत्रिका के संपादकीय में आधुनिक महिला जगत की स्थिति पर महादेवी की टिप्पणी थी, "अवश्य ही आज की नारी प्राचीन जगत की वंशज नही जान पड़ती, इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि वह स्वयं अपनी शक्ति और दुर्बलता दोनो से अनभिज्ञ है।" विश्वंभर मानव के अनुसार, "भारतीय नारी का मुख्यदोष महादेवी जी ने यह बतलाया है कि उसमें व्यक्तित्व का अभाव है। उसे न अपने स्थान का ज्ञान है, न कर्त्तव्य का। जो लोग उसकी सहायता करना चाहते है, वह उन्ही का विरोध करती है।" डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है, महादेवी ने नारी को केन्द्र में रखकर ही समस्याओ पर दृष्टिपात किया है। इन निबंधो में उनका भारतीय नारी के प्रति सहानूभूति से भरा हुआ मन उस सामाजिक तत्वों के प्रति क्षुब्धा है जो नारी के लिए 'श्रृंखला की कड़ियाँ' बन गए है। महादेवी श्रृंखला की कड़ियों को काट फेंकने के लिए नारी को उद्बुद्ध करना चाहती है, किंतु वे यह भी चाहती है कि विद्रोहिणी नारी अपने नारीत्व के मूलभूत आधारों को भी सुरक्षित रखें।"

निष्कर्ष –

महादेवी वर्मा जी का स्त्री चिंतन कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह उस समय का स्त्री चिंतन है जब भारतीय स्त्री का 90 प्रतिशत हिस्सा निरक्षर था आज तो स्त्री साहित्य लेखन के केन्द्र में आ गई है। 'स्त्री–विमर्श' के नाम पर अंतहीन बहसें भी हो रही है, जहां कहीं भी कभी देहवाद की चर्चा होती है तो कहीं उसे स्वैराचार की अनुमति दी जाती है। कहीं उसके पुरूषों से तुलना कर उसकी अपनी मौलिकता को नाश किया जा रहा है, फिर भी ऐसा नही लगता है कि भारतीय समजा में स्त्री की स्थिति में कोई खास सुधार आया है। भले आज सरकारी आरक्षण से स्त्री की सामाजिक गति बढ़ी है, किंतु अपने परिवार में उसकी स्थिति यथावत हीहै। 'स्त्री–विमर्श' के इस दौर में स्त्री जाति के सम्मान को पुनः दिलाना तो दूर, बल्कि उसके स्वाभाविक गुणों को भी नेस्तनाबूद किया है। यह सब विदेशी मानसिकता का फल है। महादेवी चिंतन परम्परा के बंधनों से जकड़ी स्त्री के लिए देह की मुक्ति की बजाय सत्ता को चुनौती देता है। इसलिए यह चिंतन देश की आधी आबादी को अपने अधिकारो औ कर्त्तव्यों की याद दिलाता है और उन्हे पाने के लिए संघर्ष की प्रेरणा देता है, जिसका अंतिम ध्येय सभ्य और सुसंस्कृत समाज का पुनर्निमाण करना है। इस तरह स्त्री का विषयक चिंतन स्त्री विषयक इतिहास लेखन की दशा और दिशा को तय करने में विशेष महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सदंर्भ ग्रंथ –

1 डॉ. अग्रवाल सुरेश – हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि –, अशोक प्रकाशन, दिल्ली सं० 1998

2 आजकल, मार्च 2007

3 वर्मा महादेवी – श्रृंखला की कड़ियाँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2004

4 मानव विश्वंभर – हिन्दी साहित्य का सर्वेक्षण, सं, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 1977

5 तिवारी रामचन्द्र – हिन्दी का गद्य साहित्य, सं., विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पुनमुर्द्रण, 1999

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 7 | July 2025

6 वर्मा महादेवी – अतीत के चलचित्र, – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

7 वर्मा महादेवी – स्मृति की रेखाएँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद